PG Sem II
CC-7

Page No. 1
Date

Topic – OCD (Obsessive Compulsive Disorder)
(मनोग्रस्ति - बाध्यता विकृति)

मनोग्रस्ति - बाध्यता विकृति, चिंता विकृति का एक महत्वपूर्ण प्रकार है। इसके दो पहलू है —
(i) मनोग्रस्ति (ii) बाध्यता।

(i) मनोग्रस्ति (obsession) मनोवैज्ञानिक फिशर के अनुसार — "मनोग्रस्ति एक ऐसा विशिष्ट स्वरूप की मानसिक या आन्तरिक क्रिया है जिसे व्यक्ति अतार्किक समझता है, लेकिन उस पर उसका कुछ भी नियन्त्रण नहीं रहता है।"

पेज के अनुसार :— "मनोग्रस्ता वह विचार या आवेग है जो रोगी की इच्छा के प्रतिकूल स्वतः उसके मन में बार-बार आता है।"

होम्स के अनुसार :- "मनोग्रस्ति का तात्पर्य किसी विचार ने पुनरावृत, अनियंत्रित चिन्तन से है।"

अब हम उपर्युक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करते है तो निम्नलिखित बातें सामने आती है —
(i) मनोग्रस्ति एक मानसिक क्रिया या विचार है।
(ii) यह उसकी इच्छा के विरुद्ध आता है।
(iii) इसके रोगी के मन में एक अतार्किक विचार बार-बार आता रहता है।
(iv) इसपर उसका कुछ नियन्त्रण नहीं रहता है।

अतः 'मनोग्रस्ति' तथा 'बाध्यता' दोनो की परिभाषाओं को देखते हुए हम यह कह सकते है कि दोनों एक ही मनोदशा के दो रूप है।

पहला बोधात्मक है जिसका प्रकाशन केवल ज्ञान के स्तर पर होता है तथा दूसरा क्रियात्मक है, जिसका प्रकाशन एक विशेष प्रकार की शारीरिक चेष्टाओं के रूप में होता है। कभी-कभी मनोग्रस्ति विचार और बाध्य-क्रियाएँ दोनों एक ही व्यक्ति में पायी जाती है। इसलिए इसे हम मनोग्रस्ति - बाध्यता विकृति (OCD) के नाम से जानते है।

रोगी में कभी मनोग्रस्ति विचार की प्रधानता रहती है तो कभी बाध्य क्रियाओं की। जब मनोग्रस्ति विचार की प्रधानता रहती है तो ऐसी बात नहीं होती है।

अतः यह एक प्रकार का मानसिक रोग है जिससे रोगी किसी प्रकार के विचार या आवेग तथा क्रिया की इच्छा के प्रतिकूल बार-बार करने के लिए बाध्य होता है। जैसे साफ हाथों को बार-बार धोना, बार-बार बन्द ताले को देखना, किसी संख्या-विशेष को बार-बार दुहराना, पास बैठे व्यक्ति को चुटकी काटना, आदि इसके कई उदाहरण है।

## Symptoms of OCD —

1. अनावश्यक विचारों की पुनरावृत्ति :— इस रोगी का मुख्य लक्षण पुनरावृत्ति विचारों का शिकार होना है। ये विचार व्यक्ति को निकम्मा बना देता है। इसका रोगी अत्यधिक विचारशील तथा बौद्धिक होता है। उसे यह ज्ञात रहता है कि उसका विचार अर्थहीन है तथा उसका कोई महत्व नहीं है, किन्तु फिर भी गुलाम बना रहता है। जब कभी वह इस मनोग्रस्ति विचार से छुटकारा पाने का प्रयास करता है तो इसी प्रकार का दूसरा विचार आजाता है, इस तरह उसके मन में विचारों का तांता लगा रहता है। "इस मनोग्रस्ति विचार के चलते हिटलर ने संसार पर विजय प्राप्त करना चाहा था।"

(ii) संदेह (Doubt) — कुछ रोगी इतने संदेही हो जाते है कि उन्हें शुभ-अशुभ की भी शंका होने लगती है, जिससे वह काफी भयभीत हो जाते है। यानि वे भय-संवेग से पीड़ित रहते है। परन्तु फोबिया से ग्रस्त व्यक्ति का भय इस रोगी के भय से भिन्न होता है। जब किसी व्यक्ति को इस भय का भाव उद्दीपक की उपस्थिति से होता है तो उसे फोबिया का रोग कहा जाता है, परन्तु जब व्यक्ति उद्दीपक के अभाव में सिर्फ उसके बारे में सोच-विचार करके डर लगता है तो उसे बाध्यता का रोगी समझा जाता है। ए. रौस ने इसका उदाहरण 13 की संख्या वाले व्यक्ति जिसके मन में 13 की संख्या बराबर नाचा करता था। इसके विचार से वह अत्यधिक भयभीत रहता था।

(xii) क्रिया विशेष की पुनरावृत्ति (Repetition of certain Act)
कुछ रोगियों में अत्यधिक संवेगात्मक तनाव देखा जाता है। मानसिक संघर्ष तथा भावना ग्रन्थियों का प्रदर्शन विचित्र क्रियाओं में होता है। रोगी जानता है कि उसकी क्रियाएँ असंगत तथा आधारहीन है, लेकिन वह उन्हें करने के लिए विवश रहता है। इन क्रियाओं को करने की आदत लग जाती है। कुछ लोगों को यह संदेह होता है कि दरवाजे में ताला नहीं लगाया है। वह कई बार मुड़-मुड़ कर चेक करता है कि ताला बन्द है या नहीं। इस तरह यदि उसकी इस क्रिया में किसी तरह की बाधा पड़ती है तो वह अत्यधिक क्षुब्ध, बेचैन, क्रुद्ध तथा चिड़चिड़ा स्वभाव का हो जाता है, जिससे उसे नींद भी नहीं आती है। गिनने की बाध्यता, छूने की बाध्यता आदि लक्षण देखे जाते है। अतः इस प्रकार के रोगी में बार-बार हाथ धोने, रुपया गिनने, बाल झाड़ना, घर धोने, समान धोने, सड़क के किनारे के पेड़ों को छूने, पुस्तक की पत्तियों को पेन्सिल से चिह्नित करना, सब जगह अपना हस्ताक्षर करना आदि की बाध्यता क्रियाएँ देखी जाती है।
शेक्सपियर के नाटक "मैकबेथ" में इसका सुन्दर उदाहरण मिलता है। लेडी मैकबेथ का बार-बार हाथ धोना इसी रोग का लक्षण है।